Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

कला समेकित अधिगम द्वारा सांस्कृतिक जागरूकता का विकास

अपराजिता यादव (सीनियर रिसर्च स्कालर)
शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट दयालबाग, आगरा

डॉ. सोना दीक्षित (असिस्टेन्ट प्रोफेसर)
शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट दयालबाग, आगरा

शोध सारांश

संस्कृति के वाहक के रूप में कला की महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका रही है। एक शिक्षार्थी के प्रखर व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में संस्कृति, साहित्य और कला सभी आवश्यक होते है। नई शिक्षा नीति में कला व संस्कृति के बारे में स्पष्ट उल्लेख करते हुए कहा गया है कि कला ऐकीकरण शिक्षा और संस्कृति के बीच संबधों को मजबूत करेगा तथा यह शिक्षा को न केवल आनंदमय कक्षाएं बनाने के लिये,बल्कि हर स्तर पर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में भारतीय कला और संस्कृति के ऐकीकरण के माध्यम से भारतीय लोकाचार को आत्मसात करने के लिये कक्षा के लेनदेन में शामिल किया जायेगा। प्रस्तुत शोध अध्ययन "कला समेकित अधिगम द्वारा सांस्कृतिक जागरुकता का विकास" का उद्देश्य, कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा सांस्कृतिक जागरूकता अर्थात संस्कृति में रूचि व अभिवृत्ति के विकास का अध्ययन करना था । कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा छात्राओं के व्यवहार की गुणात्मक विवेचना भी की गयी । वर्तमान अध्ययन की शोध विधि में अर्ध्द प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग उसके उद्देश्यों व प्रकृति को ध्यान मे रखकर किया गया। अध्ययन प्रक्रिया के रूप में पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण एकल समूह अभिकल्प निर्मित किया गया। अध्ययन की दिशात्मक परिकल्पना को स्वीकृत किया गया तथा यह सिद्ध हुआ कि कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि तथा अभिवृत्ति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। प्रयोग के अंतर्गत छात्राओं के व्यवहार का निरीक्षण किया गया जिसमे शोधकर्ता ने पाया की छात्र कक्षा–कक्ष में आरम्भ की अपेक्षा बाद में सहज महसुस करने लगी तथा कठपुतली प्रदर्शन के दौरान छात्राओं को अपनी प्रतिभा अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त हुए। छात्राओं ने अधिक आनन्द व सन्तुष्टि के भाव व्यक्त किये। छात्रायें सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ सम्बन्ध स्थापित कर रही थी साथ ही साथ उनकी सम्प्रेषण क्षमता पहले से बेहतर पायी गयी। छात्राओं में भारतीय संस्कृति के मूल्य– प्रेम, सद्भाव, सहयोग, मैत्रीभाव, आनन्द आदि का विकास हुआ।

मुख्य शब्द : *संस्कृति, कला समेकित अधिगम, रूचि, अभिवृत्ति*

१.प्रस्तावना

कला किसी भी विचार और कल्पना का मूर्त रूप है। कला में संस्कृति समाहित होती है। संस्कृति के वाहक के रूप में कला की महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका रही है। सीखने– सिखाने की प्रक्रिया में दृश्य व प्रदर्शन कला के उपयोग से सृजनात्मकता को प्रोत्साहन मिलता है तथा समस्या समाधान की क्षमता विकसित होती है। सुप्रसिद्ध प्रयोजनवादी दार्शनिक **जॉन डी वी**(1906) के अनुसार "कोई व्यक्ति क्या कर रहा है इसके अनुभव का आनन्द उठाना, उस संगामी अर्न्तजीवन की प्रक्रिया के एक

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

पक्ष में खो जाना और सामग्री सन्दर्भों का तदनुसार सुनियोजित विकास करना ही कला है।" कला के द्वारा बच्चों को समग्र रूप से सीखने और व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायता मिलती है। इसी सन्दर्भ में **सियोल एजेडा (2010)** की प्रस्तावना इस बात पर बल देती है कि "आज के संसार में जहाँ एक ओर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, वहीं दूसरी ओर असाध्य सामाजिक और सांस्कृतिक अन्याय भी हो रहा है। तेजी से बदलती इस दुनिया में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षा व्यवस्था संघर्ष कर रही है। इस शिक्षा व्यवस्था के रचनात्मक परिवर्तन में कला शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

किसी भी समाज की उन्नति का पैमाना उस समाज का सांस्कृतिक परिदृश्य ही माना जाता है। मनुष्य ने स्वयं की भावनाओं, अनुभूतियों, संवेदनाओं और अनुभवों को संगीत, चित्र या अभिनय के रूप में अभिव्यक्ति दी। यह संविदित अभिव्यक्तियाँ जब इतिहास के रूप में संकलित की जाती है तो यह संकलन सांस्कृतिक विकास का क्रमबद्ध एवं चेतन इतिहास बनकर सामने आता है। संस्कृति को परिभाषित करते हुए **लापीयर** ने कहा है– "संस्कृति पीढ़ियों से प्राप्त किसी सामाजिक समूह की शिक्षा है जो रीति रिवाजों परम्पराओं अदि में अभिव्यक्त होती है।" संस्कृतियों के वाहक के रूप में कला की महत्वपूर्ण शैक्षिक भूमिका रही हैं । शिक्षण उद्देश्य के दृष्टिकोण से कला समेकित अधिगम और संस्कृतियों का अनेक तरीके से उपयोग किया जा सकता है। जैसे संसाधन के रूप में, माध्यम के रूप में, कौशल के रूप में विकसित किये जा सकते हैं। कला समेकित अधिगम तथा संस्कृति जहाँ हमारे जीवन और अधिगम को समृद्ध बनाते हैं वहीं इनका उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को सरल सुगम, आनन्दायी और रोचक बनाने में भी किया जा सकता ळें

यूनेस्को की रिपोर्ट (2000) में यूनेस्कों के डायरेक्टर जनरल ने कला को स्कूली शिक्षा के लिए अनिवार्य विषय बनाने का प्रस्ताव दिया। उनके अनुसार कला शिक्षण द्वारा सृजनात्मकता एवं सांस्कृतिक शान्तिपूर्ण एवं सौहार्दमय वातावरण का विकास सम्भव है। कला व संस्कृति के द्वारा छात्रों के अचेतन मन की दमित इच्छाओं को बाहर निकालने का अवसर प्राप्त होता है। साथ ही उनके विचारों की शुद्धता का बोध हो पाता है। **सोंग (2018)** ने अपने अध्ययन "फोस्टरिंग कल्चरली रेस्पोसिव स्कूलः स्टूडेन्ट आइडेन्टिी डेवलपमेंट इन क्रॉस कल्चरल क्लासरूम" के परिणाम में पाया कि कक्षागत शिक्षण के अन्तर्गत बहुसांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करने में कला शिक्षा द्वारा रचित शैक्षणिक क्रियाकलाप अत्यन्त सफल सिद्ध होते हैं।

कला छात्रों को संवेदी भावनात्मक बौद्धिक एवं रचनात्मक रूप से समृद्ध करती हैं और उनसे सर्वांगीण विकास में मदद करती है। कला शिक्षा छात्रों के सम्प्रेषण कौशल तथा नवीन विचारों को प्रोत्साहित करने के साथ–साथ छात्रों के बहुबुद्धि विकास में अत्यन्त सहायक है। **रवीन्द्र नाथ टैगोर** के अनुसार– "एक शिक्षार्थी के प्रखर व्यक्तित्व के निर्माण एवं विकास में संस्कृति, साहित्य ओर कला सभी आवश्यक है।" **जूली एन हेलटर, टिसोधी मोक व सना आयूब (2016)** द्वारा एक अध्ययन किया गया और परिणाम में पाया गया कि शिक्षक 'दृश्य कलाओं व उनके प्रत्ययों का प्रयोग विद्यार्थियों की शिक्षा में रूचि तथा सांस्कृतिक समझ को बढाने के लिये करते हैं।' **सी.बी.एस.सी. द्वारा जारी सर्कुलर (2019)** के अनुसार "आर्ट इंटीग्रेटड लर्निंग क्लासरूम को आनंदमय व रचनात्मक बनाता है। यह हमारी समृद्ध कला और सांस्कृतिक विरासत की सराहना को भी बढ़ावा देता हैं सी.बी.एस. सी. ने कक्षा 1 से 12 तक सभी शैक्षिक विषयों की शिक्षण व सीखने की प्रक्रिया के साथ कला को ऐकीकृत करने का निर्णय किया है।"

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

नई शिक्षा नीति में कला व संस्कृति के बारे में स्पष्ट उल्लेख करते हुए कहा गया है कि कला ऐकीकरण शिक्षा और संस्कृति के बीच संबधों को मजबूत करेगा तथा यह शिक्षा को न केवल आनंदमय कक्षाएं बनाने के लिये,बल्कि हर स्तर पर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में भारतीय कला और संस्कृति के ऐकीकरण के माध्यम से भारतीय लोकाचार को आत्मसात करने के लिये कक्षा के लेनदेन में शामिल किया जायेगा। कक्षा–कक्ष में शिक्षण उपकरण के रूप में शिक्षक कठपुतली कला का उपयोग कर सकते हैं। इस कला के द्वारा छात्र एक काल्पनिक जगत का निर्माण कर पाने में समर्थ हो पाते हैं। कठपुतली कला के माध्यम से छात्रों को स्वयं को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है। कठपुतलियाँ ध्यान को आकर्षित करती हैं। वे कल्पना व रचनात्मकता से परिपूर्ण होती हैं। **हामरे (2012)** ने अपने शोध में पाया कि कठपुतली कला के उपयोग से कक्षा में सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता और जागरूकता उत्पन्न करने में सहायक साबित हुआ है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में इसका उपयोग करके शिक्षण प्रक्रिया को अधिक सफल व रोचक बनाया जा सकता है। इसी सन्दर्भ में **ओहारे (2004)** ने कठपुतली कला के महत्व पर अध्ययन किया और पाया कि "कठपुतली कलात्मक दृष्टि को विकसित करने में सहायक हैं।"

२.शोध प्रश्न

शोधार्थिनी के संज्ञान में आने वाले शोध प्रश्न इस प्रकार हैं–

१. क्या कठपुतली कला समेकित अधिगम के द्वारा संस्कृति के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है?
२. क्या कला समेकित अधिगम के द्वारा संस्कृति के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विकसित की जा कसती है?
३. क्या कठपुतली कला समेकित अधिगम के द्वारा सांस्कृतिक जागरूकता का विकास किया जा सकता है?

३. अनुसंधान समस्या का कथन

इन प्रश्नों के उत्तर खोजने हेतु शोधार्थिनी ने निम्न समस्या का चयन किया "कला समेकित अधिगम द्वारा छात्रों में सांस्कृतिक जागरूकता के विकास का अध्ययन"

४. अध्ययन में प्रयुक्त चरों की कार्यात्मक परिभाषा

४.१.कला समेकित अधिगम

टॉल्सटॉय के अनुसार– "कला समेकित अधिगम अनुभावात्मक अधिगम की एक ऐसी रूपरेखा है जो सभी विद्यार्थियों के अपने अभिगम बिन्दुओं के माध्यम से सीखने का एक समान वतावरण प्रदान करती है।"

चित्र नं. 1 कला के प्रकार

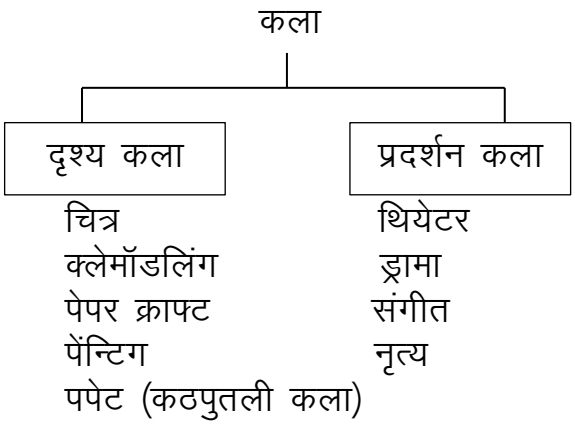

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

४.२ प्रकार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में कला समेकित अधिगम क्रियाओं से तात्पर्य प्रदर्शन कला के अन्तर्गत कठपुतली कला (छड़ कठपुतली, धागा कठपुतली, छाया कठपुतली, दस्ताना गठपुतली) का प्रयोग किया गया है।

४.३ सांस्कृतिक जागरूकता

लापीयर के अनुसार– "संस्कृति पीढ़ियों से प्राप्त किसी सामाजिक समूह की शिक्षा है जो रीति रिवाजों परम्पराओं तथा क्रियाओं में अभिव्यक्त होती हैं।"

प्रकार्यात्मक परिभाषा– प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी द्वारा सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतिनिधित्व तथा ऑकलन करने हेतु संस्कृति के प्रति रुचि तथा अभिवृत्ति का मापन करने हेतु मापनी विकसित की गयी है। सांस्कृतिक जागरूकता के अन्तर्गत निम्न तत्वों को सम्मलित किया गया है। 1. रुचि, 2. अभिवृत्ति ।

५. अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि के विकास का अध्ययन करना।
- कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में अभिवृत्ति के विकस का अध्ययन करना।
- कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा छात्राओं के व्यवहार की गुणात्मक विवेचना करना।

६. परिकल्पना

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के आधार पर शोधार्थिनी द्वारा दिशात्मक परिकल्पना का निर्माण किया गया जो निम्न है–

H_1 कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H_2 कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम के द्वारा संस्कृति में अभिवृत्ति के विकास पर साकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

७. अध्ययन का परिसीमांकन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन आगरा मण्डल के यू.पी. बोर्ड विद्यालय तक सीमित है।
- शोध अध्ययन के रूप में कक्षा 9 की छात्राओं को ही शामिल किया गया है।
- कला समेकित अधिगम के अन्तर्गत सिर्फ कठपुतली कला का प्रयोग किया गया है।

८. अध्ययन के चर

स्वतन्त्र चन– कला समेकित अधिगम
आश्रित चर– सांस्कृतिक जागरूकता,
नियन्त्रित चर– लिंग, विद्यालय, विषय, कक्षा

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

९. अध्ययन की विधि

शोध अध्ययन की विधि के रूप में अर्द्धप्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध अध्ययन में विद्यालय एवं कक्षा का चयन सोद्देश्य विधि से किया गया है तथा कक्षा 9 की छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

१०. शोध अभिकल्प

समूह	पूर्व परीक्षण	उपचार	अवधि	पश्च परीक्षण
प्रयोगात्मक समूह	संस्कृति जागरुकता के प्रति रुचि व अभिवृत्ति मापनी का पूर्व परीक्षण	कला समेकित अधिगम से सम्बन्धित मॉड्यूल का प्रयोग किया गया।	20 कार्य दिवस	संस्कृति जागरुकता के प्रति रुचि व अभिवृत्ति मापनी का पश्च परीक्षण

११. अध्ययन की प्रक्रिया

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पूर्व परीक्षण एवं पश्च परीक्षण एकल समूह अभिकल्प का प्रयोग किया गया है प्रयोगात्मक समूह के रूप में छात्राओं को संस्कृति के विभिन्न पक्षों का अध्ययन कठपुतली कला के प्रयोग से कराया गया। इस कार्य हेतु 30 मिनट के 20 मॉड्यूल विकसित किये गये जिनका 3 महीनों तक प्रयोग किया गया।

१२. अध्ययन न्यादर्श

कक्षा व विद्यालय का चयन सोद्देश्य न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है तथा छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में 20 छात्राओं का चयन किया गया।

१३. प्रयोगात्मक विधि की रूपरेखा

योजना चरण– कठपुतली कला समेकित अधिगम क्रियाओं से सम्बन्धित मॉड्यूल का निर्माण शोधछात्रा द्वारा विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में पूर्ण किया गया है।

कक्षागत प्रयोग– प्रारूप की योजना बना लेने के पश्चात प्रयोगात्मक विधि के माध्यम शोध पूर्ण किया गया है। शोध छात्रा द्वारा यादृच्छिकरण विधि से न्यादर्श का चयन समूह पर प्रयोग किया किया गया। समूह में संस्कृति के प्रति रुचि व अभिवृत्ति पर पूर्व परीक्षण प्रशासित किया गया। तदुपरांत कठपुतली कला समेकित अधिगम क्रियाओं से सम्बन्धित सांस्कृतिक जागरुकता के मॉड्यूल का प्रयोगात्मक समूह पर अध्ययन किया। अन्त में पश्च परीक्षण प्रशासित करके अध्ययन को पूर्णता प्रदान किया गया।

१४. मूल्यांकन चरण

कठपुतली कला समेकित अधिगम क्रियाओं की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए पूर्व व पश्च परीक्षण से प्राप्त परिणामों की उपयुक्त सांख्यिकी विधियों के माध्यम से परस्पर तुलना की गयी।

१५. अध्ययन के उपकरण

सांस्कृतिक जागरुकता मापनी का निर्माण शोधार्थिनी द्वारा स्वयं किया गया है।

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

१६. सांख्यिकीय विधियाँ

मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' परीक्षण

१७. ऑकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थिनी ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया शोधार्थिनी ने ऑकड़ों की गणना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर रुचि तथा अभिवृत्ति का मध्यमान तथा प्रमाणिक विचलन निकाला गया। तत्पश्चात कला समेकित अधिगम द्वारा सांस्कृतिक जागरूकता के प्रति पूर्व व पश्च परीक्षण के तुलनात्मक अध्ययन हेतु टी परीक्षण का प्रयोग किया गया प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

उद्देश्य प्रथम कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि के विकास का अध्ययन करना।

आरेख सं.1 रूचि मापनी पर प्राप्त ऑकड़ों का विवरण–

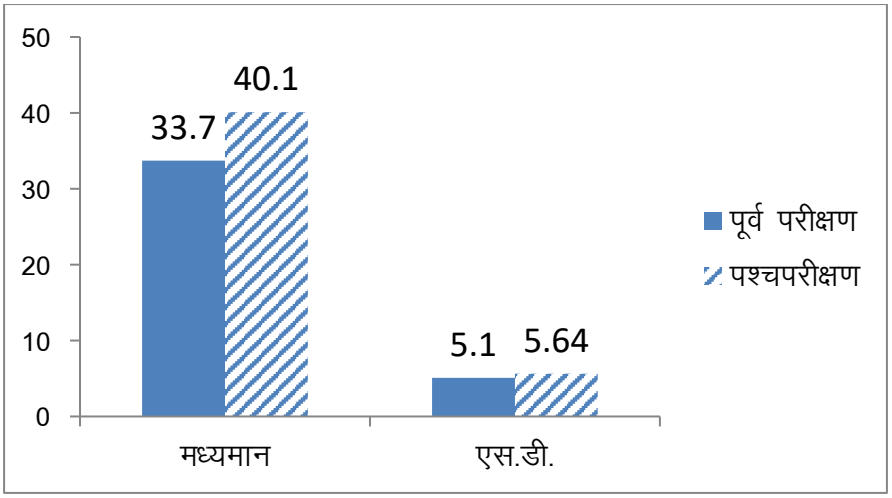

आरेख सं. 1 से स्पष्ट है कि रूचि के पूर्व परीक्षण का मध्यमान 33.74 तथा S.D. 5.10 प्राप्त हुआ है तथा पश्च परीक्षण का मध्यमान 40.10 तथा S.D. 5.64 प्राप्त हुआ है। अतः रुचि मापनी पर प्राप्त आकड़ों के विवरण से स्पष्ट है कि मध्यमन तथ एस.डी. के मान पूर्व परीक्षण की तुलना में पश्च परीक्षण पर अधिक प्राप्त हुआ ।

परिकल्पना प्रथम– H^1 कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

तालिका सं. 1

रूचि	संख्या	मध्यमान	एस.डी.	डी.एफ.	टी–मान	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	20	33.70	5.10	19	6.8977	सार्थक
पश्चपरीक्षण	20	40.10	5.64			

शोधार्थिनी द्वारा शोध का तुलनात्मक अध्ययन, करने के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणनात्मक टी मान 6.8977 प्राप्त हुआ जो कि 0.0001 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः परिकल्पना कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में रूचि के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है को स्वीकार किया जाता है।

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

उद्देश्य द्वितीय– कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में अभिवृत्ति के विकस का अध्ययन करना।

आरेख सं.2 अभिवृत्ति मापनी पर प्राप्त ऑकड़ों का विवरण–

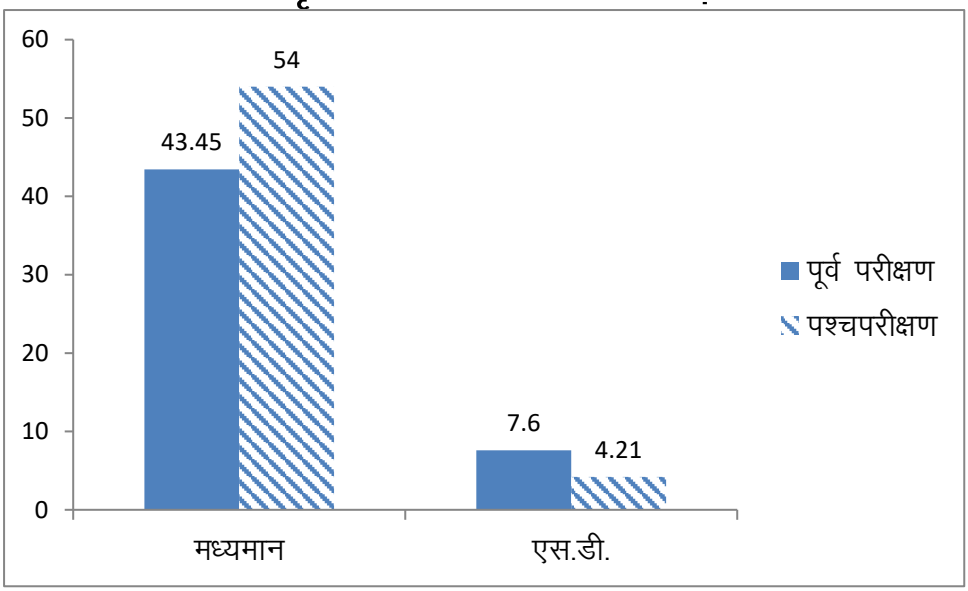

आरेख सं. 2 से स्पष्ट है कि अभिवृत्ति के पूर्व परीक्षण का मध्यमान 43.45 तथा S.D. 7.60 प्राप्त हुआ है तथा पश्च परीक्षण का मध्यमान 54.00 तथा S.D. 4.21 प्राप्त हुआ है। अतः अभिवृत्ति मापनी पर प्राप्त आकड़ों के विवरण से स्पष्ट है कि मध्यमान तथ एस.डी. के मान पूर्व परीक्षण की तुलना में पश्च परीक्षण पर अधिक प्राप्त हुआ।

परिकल्पना द्वितीय–कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में अभिवृत्ति के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है–

तालिका सं.2

रूचि	संख्या	मध्यमान	एस.डी.	डी.एफ.	टी–मान	सार्थकता
पूर्व परीक्षण	20	43.45	7.60	19	11.0793	सार्थक
पश्चपरीक्षण	20	54.00	4.21			

शोधार्थिनी द्वारा तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए टी परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणनात्मक टी मान 11.0793 प्राप्त हुआ जो कि 0.0001 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः परिकल्पना कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा संस्कृति में अभिवृत्त के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है को स्वीकार किया जाता है।

उद्देश्य त्रतीय कठपुतली कला समेकित शिक्षण अधिगम द्वारा छात्राओं के व्यवहार की गुणात्मक विवेचना करना।

१८. छात्राओं के व्यवहार की गुणात्मक व्याख्या

प्रदत्तों को भली भांति प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या करने के पश्चात यह आवश्यक होता है कि अध्ययन की गुणात्मक विवेचना की जाये। शोध छात्रा ने शोध कार्य के दौरान छात्रों में निम्नलिखित व्यावहारिक परिवर्तनों का अवलोकन किया जिनकी गुणात्मक विवेचना अग्रवत् है–

- विभिन्न प्रकार की कठपुतली के प्रयोग द्वारा छात्रों में उत्साह का भाव देखा गया तथा शोधार्थिनी द्वारा पूछे जा रहे विभिन्न प्रकारा के प्रश्नों के उत्तर छात्र सहज भाव से दे पा रहे थे।

Vol. 11, Issue: 08, August: 2023
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

- छात्राओं में भारतीय संस्कृति के मूल्य– प्रेम, सद्भाव, सहयोग, मैत्रीभाव, आनन्द का विकास हुआ। छात्र कक्षा–कक्ष में पहले की अपेक्षा बाद में सहज महसुस करते हुये पाये गये।
- शोधार्थिनी द्वारा जो कठपुतली दिखायी गयी उन कठपुतलियों को बनाने में छात्रायें बढ़ छड़कर हिस्सा लेती हुई पायी गयीं।
- जो छात्रायें कक्षा के आरम्भ में शान्त एवं एकान्त प्रिय थी वे भी कुछ प्रदर्शनों के बाद शिक्षक से अन्तःक्रिया करने लगीं। कक्षा में वह सहभागीता दर्शाने लगी।
- कठपुतली के प्रदर्शन में कुछ छात्रायें नवीन तत्वों को सम्मलित करने लगीं, जैसे– गायन, वादन से स्वयं को एकीकृत करने लगीं।
- कठपुतली प्रदर्शन के दौरान छात्राओं को अपनी प्रतिभा अभिव्यक्त करने के अवसर प्राप्त हुए। जिससे छात्राओं ने अधिक आनन्द व सन्तुष्टि के भाव व्यक्त किये।
- छात्रायें अधिक उत्साह के साथ कक्षा कक्ष में उपस्थित होने लगीं तथा अगली कक्षा का इन्तजार करते हुऐ पायीं गयीं। इसी सन्दर्भ में **फिशलर (2012)** ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि "कक्षा में कठपुतली कला के द्वारा सीखने को आनन्दमय, आकर्षक और रूचिकर बनाया जा सकता है।"

१९. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन कठपुतली कला समेकित अधिगम शिक्षा जगत में नवीन गतिविधियों को खोजने का एक विकासात्मक चरण है। अतः अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य का पता लगाया जा सकता है कि वर्तमान पीढ़ी में संस्कृति से जुड़े विषयों में जागरूकता के प्रति जो अरूचि है उसमें कठपुतली कला समेकित अधिगम क्रियाएं क्या भूमिका निर्वाह करती हैं। प्रस्तुत शोध में शोधार्थिनी ने पाया कि भारतीय संस्कृति के प्रति कक्षा में छात्रों की अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी। छात्रायें सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ अन्तः सम्बन्ध स्थापित कर र ही थी तथा कक्षा में विभिन्न गतिविधियों में भी रूचि प्रदर्शित करते हुये पायी गयी। कठतपुली कला छात्रों को भावनात्मक रूप से विकसित करने और उनकी भाषा, संचार कौशल तथा सांस्कृतिक जागरूकता विकसित करने के लिए एक आकर्षक और उपयोगी तरीका है।

सन्दर्भ गन्थ सूची

१. प्रसाद, देवी (1998). आर्ट द बेसिस ऑफ एजुकेशन, नेशनल बुक ट्रस्ट,
२. द सिओल एजेंडा : (2010) गोल्स फॉर द डेवलपमेंट ऑफ आर्ट्स एजुकेशन, द सेकेण्ड वर्ल्ड कॉनफ्रैंस ऑन आर्ट एजुकेशन सिओल.
३. पोजीशन पेपर ऑन आर्ट्स म्यूजिक डांस एण्ड थिएटर, एनसीईआरटी (2006).
४. कला शिक्षा एवं संस्कृति (भाग–2) राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छात्तीसगढ़, रायपुर।
५. शिक्षा का वाहन कला– देवी प्रसाद।